शिवपूजा पद्धति प्रकाश:

शिवपूजा पद्धति प्रकाश:

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रकाशक :

सत्यम् प्रकाशन,
सत्य दर्शन आश्रम, 294, शीशमझाडी,
ऋषिकेश, 249202, उत्तराञ्चल,
दूरभाष : 0135-2436291
ईपत्र : sw_sds@sify.com

मुद्रक : मेहरा आफसेट प्रेस, दिल्ली-110002

प्राप्ति स्थान : -

1. प्रकाशक श्रीमान्

2. श्रीमान् पदमसेन गुप्ता, प्रेम कुटीर, पूर्जानन्द इण्टर कॉलेज का पीछे, कैलस गेट, ऋषिकेश, फोन : 0135-2436771

3. पदमसेन गुप्ता, म. नं. 831, 13 सेक्टर, अरबन एस्टेट, करनाल, हरियाणा, फोन : 0184-2200624, 2221503

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

महाशिव रात्री

।।ॐ श्री सदाशिवाय नम:।।

न्रम निवेदन

यह भारतवर्ष धर्मप्रधान देश होने के साथ साथ सन्तों की भूमि रहा है। सदा सन्तों की प्रेरणा से भक्तों ने विभिन्न प्रकारके अनुष्ठानों से धर्म को सुदृढ एंव संस्कृति की रक्षा करते आये हैं। परमादरणीय स्वामी श्री परमानन्द भारतीजी की प्रेरणा से करनाल, हरियाणा के निवासी लाला श्री पदमसेन गुप्ताजी ने यह पुस्तिका छपवाकर धर्मप्रेमी सज्जनों की सेवा में प्रदान कर "मुद्रणयज्ञ" द्वारा भगवान एंव धर्म की सेवा -पूजा किये है। एक विद्वान जिज्ञासु द्वारा संकलन एंव संपादन हुई है। इस पुस्तिका का मुद्रण कार्य दिल्ली के निवासी अर्थशास्त्री श्री मान् भरत झुनझुनवाला का सहयोग, शीघ्रातिशीघ्र टङ्कित कर मुद्रण करने वाले मुद्रक श्री (..................................) दिल्ली और अन्य समस्त सहयोगियों को धन्यवाद सहित ईश्वर से प्रार्थना है की सबकी मनोकामनायें पूरी हो। लाला जी की धर्मपत्नि श्री मति प्रेमा गुप्ता के उत्साह पूर्ण प्रेरणा ही महाशिवरात्री के अवसरपर अत्यल्प समय में यह छप सका है। त्रुटियो के लिये क्षमा याचना के साथ शिवार्पणमस्तु।

संपादक एक जिज्ञासु

"प्रस्तावना"

इस परिर्वतनशील एवं विनाशशील क्षणभङ्गुर दु:खमय जगत् में प्राप्त यह दुर्लभ अल्प आयुवाला मनुष्य जन्म को वास्तव में सफल बनाने एंव सुख-शान्तिपूर्वक व्यतीत करने के लिये ही नहीं, बल्कि मनुष्य मात्र का परम लक्ष्य मोक्ष-आत्मसाक्षात्कार-भगवान का र्दशन को पाने का तथा इहलोक एंव परलोक में पूर्ण यश आदि के प्राप्ति का एकमात्र साधन "वेद" है। वेद मानव मात्र का कल्याण के लिये आवशयक संर्म्पूण मानव धर्म को बताता है। अत: वेद को सनातन धर्म का मूलभूत एंव आधारभूत ग्रन्थ कहा गया है। यह हिन्दू ,मुस्लिम, ईसाई, बौद्व, जैन, सिख, पारसी, यहूदी, आदि सभी तथाकथित धर्मो का भी धर्म है। ये सब इसी वैदिक सनातन धर्मरूपी वृक्ष की शाखायें हैं। इतना ही नहीं आजकल अनेकों तथाकथित सम्प्रदाय भी वास्तविक संप्रदाय नहीं है। ये तो शाखा के पत्तों के समान हैं।

वास्तव में वैदिक सनातन धर्म ही एक मात्र धर्म है जो समस्त मानव का लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक सुख

शान्ति के पथ प्रदर्शक है। वेदों के आधार पर वैदिक सनातन धर्म में केवल पाञ्च सम्प्रदाय हैं। शैव, वैष्णव, सौर, शाक्त, एंव गाणपत। इन पाञ्चों वैदिक सम्प्रादायों में पाञ्चदेवों की पूजा- पद्धति को मानव के समस्त कामनाओं की पूर्ति का साधन बताया गया है। अत: ''पञ्चायतन'' पूजा ही जीवन की साधना, मानव की संस्कृति एंव विश्व का आध्यात्मिक धरोहर है। प्रत्येक संप्रदाय के इष्ट देवता के अनुसार पूजास्थल में पञ्च देवों की स्थापना निम्नप्रकार से किया जाता हैं। -

शिव पञ्चायतन

विष्णु		सूर्य
	शिव	
देवी		गणेश

विष्णु पञ्चायतन

शिव		गणेश
	विष्णु	
देवी		सूर्य

सूर्य पञ्चायतन

देवी		शिव
	सूर्य	
विष्णु		गणेश

देवी पञ्चायतन

विष्णु		शिव
	देवी	
सूर्य		गणेश

गणेश पञ्चायतन

विष्णु		शिव
	गणेश	
देवी		सूर्य

इस संदर्भ में विशेष ज्ञान के जिज्ञासु तन्त्रसार, शब्दकौस्तुभ, धर्म तत्त्व रहस्य मंत्र महोद्धि, इत्यादि ग्रन्थों का अवलोकन करें। आजकल कलियुग का भंयकर प्रभाव के कारण कोई भी व्यक्ति अथवा संप्रदाय वैदिक सनातन धर्म के अनुसार नहीं चल रहा है। प्रत्येक संप्रदाय किसी एक ही देवता को

लेकर चल रहे है। अन्य देवताओं की निन्दा तक करते हैं । धर्माभास, पूजाभास, अर्थात पाखण्ड सर्वत्र फैल गया है। कुछ लोग तो शिव परिवार, राम परिवार ,कृष्ण परिवार आदियों की पूजा को ही महत्व दे रहे हैं। फिर भी कुछ तो कर रहें हैं यही संतोष है। लेकिन जो भी कर रहे हैं उसे तो कम से कम सही ढंग से करना चाहिए , अर्थात संपूर्ण पूजा को वैदिक मंत्रो से (वैदिक =श्रौता पद्धति) अथवा पौराणिक श्लोकों से (पौराणिक=स्मार्त पद्धति) अथवा आगम ग्रन्थोक्त मंत्रों से (आगामिक पद्धति) करना चाहिये। पूजा के कुछ भाग को पौराणिक मन्त्रो से करना उचित नही है। अत: इस पुस्तिका में पूजा के प्रत्येक अंगों के मन्त्रों को तीनो पद्धतियो के अनुसार दिया गया हैं । जिन अंगों की पूजा में आगमिक मंत्र नहीं दिये गयें हैं उनमें भक्तलोग पौराणिक मन्त्र को ही आगम मंत्र समझे और प्रयोग करें। कहीं कहीं पर केवल वैदिक मन्त्र दिया गया है। उसका तात्पर्य है कि पौराणिक एंव आगम पद्धतियो मे भी उसी का प्रयोग करना है। आधुनिक परिकल्पित स्मार्त पद्धति के अनुसार जो लोग शिवपरिवार की पूजा करते हैं। उन लोगो को शिव परिवार पूजन विधि को भी पृथक्

दिया गया हैं जिससे स्वंय भक्तगण समझ सकते हैं कि किस प्रकार संमिश्रित परिभ्रष्ट पंरम्परा चल रही हैं। अत: समाज कल्याण के चिन्तक ब्राह्मणवर्ग , सन्त माहत्मा वर्ग एंव भक्तो से निवेदन हैं की कोशिश करें की किसी एक पद्धति के अनुसार सम्यक् पूजा कर लाभान्वित हो। इस पुस्तिका को छापने वाले करनाल, हरियाणा के निवासी लाला श्री पदमसेन गुप्ताजी ने इसे नि:शुल्क अर्थात् नित्यपूजा प्रयोगार्थ भक्तों एव धर्म प्रेमि सज्जनों के करकमलों में अर्पित करते हुए विराट् स्वरूप परमपिता परमात्मा परमशिव की सेवा-पूजा किये हैं। आशा करता हूँ भगवान की कृपा से सपरिवार सकलसुख समृद्धि उन्हें प्राप्त हो।

।।शिवार्पणमस्तु।।

अथ श्री शिव पञ्चायतन पूजन विधि

"असारे खलु संसारे सारमेतत् चतुष्टयम्।
काश्यां वासः सतां संगो गंगाम्भः शिवपूजनम्।।

अर्थात् :- इस असार संसार में केवल चार ही सार तत्व हैं। 1. काशी का निवास 2. संतो की संगति 3. गंगाजी का सेवन 4. भगवान् भूतभावन आशुतोष अवडरदानी शिव का पूजन। अतः सुरदुर्लभ मानव शरीर को प्राप्त कर भगवान सदाशिव का पूजन अवश्य करें। पूजा विधि नीचे दी जाती है।

सर्व प्रथम प्रातः कालीन नित्य कर्म एवं संध्यादि से निवृत होकर शिव पूजा के लिए पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर पवित्रीकरण मंत्र से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिडकें। पुनः आसन पवित्रीकरण मंत्र से आसन पवित्र करें। इसके बाद अपने बायीं ओर घंटा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र तथा पूजन सामग्री रखकर आचमन प्राणायाम करें। पुनः घृत का दीपक अपनी बायीं तरफ तथा तेलदीप हो तो अपनी दायीं तरफ पूर्व या उत्तर

दिशा की तरफ बत्ती करके चावल आदि पर रखकर प्रज्वलित कर हाथ धो लें।

पुनः हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्न प्रार्थना करें :-

" भो दीप! तेजोरूपा स्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ।।

दीप प्रार्थना के बाद घंटा का पूजन नीचे के मंत्र से करें : -

घंटा पूजनम्

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम् ।
घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घंटां प्रपूजयेत् ।।

गंध, अक्षत, पुष्पादि से पूजन करें ।

इसके बाद शंख का पूजन नीचे के मंत्र से करें : -

शंख पूजनम्

शङ्खपूजन - शङ्ख में दो दर्भ या दूब, तुलसी और फूल डालकर 'ओम्' कहकर उसे सुवासित जल से भर दें। इस जल को गायत्री-मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दें। फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शङ्ख में तीर्थों का आवाहन करें -

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च ।
तानि तीर्थानि शङ्खेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ।।

तब 'शङ्खाय नमः, चन्दनं समर्पयामि' कहकर चन्दन लगायें और 'शङ्खाय नमः, पुष्पं समर्पयामि' कहकर फूल चढ़ायें। इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शङ्खको प्रणाम करें -

त्वं पुरा सागरोत्पन्नः विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्जन्य नमोऽस्तु ते ।।
ॐ पाञ्जन्याय विद्महे, पावनाय धीमहि ।
तन्नो शंखः प्रचोदयात् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थदेवाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि।

प्रोक्षण - शङ्खमें रखी हुई पवित्री से निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर तथा पूजा की सामग्रियों पर जल छिड़कें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

पुनः शान्ति पाठ के लिए हाथ में गन्धाक्षतपुष्प लेकर गणेशजी का ध्यान कर नीचे का मंत्र बोले:

शान्तिपाठ

हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽ
अपरीता स उद्भिदः देवानो यथा सदमिदवृधेऽअसन्न
प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजुयतान्देवाना ꣳ रातिरभिनो
निवर्तताम् । देवानां ꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवानऽआयुः
प्रतिरन्तु जीवसे ।।

तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्
दक्षमस्त्रिधम् । अर्य्यमणं वरुण ꣳ सोममश्विना सरस्वती
नः सुभगा मयस्करत् ।।३।।

तन्नो वातोमयो भुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या
युवम् ।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम् ।
पूषानो यथा वेदसामसदमृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।
शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरोभवन्ति मानो मध्यारीरिषतार्युगन्तोः ।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-
रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्व ७ शान्तिः ।। शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ।।१२।।
सुशान्तिर्भवतु । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचोपुरन्दराभ्यां नमः।
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः ।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः । ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
श्री सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।
वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।१।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।२।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।३।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।४।।
शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।५।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।६।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।७।।

ॐ ॐ

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः ।।८।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि ।।९।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषाम्पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।।१०।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।। ११।।
अनन्याश्चिन्तयंतो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।१२।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।।१३।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।।१४।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशी गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।१५।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।।१६।।

ॐ ॐ

हाथ में लिए गए अक्षत पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दें।
इसके बाद हाथ में जलाक्षत पुष्प लेकर संकल्प बोलें :-

संकल्पं

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरान्ते अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे जम्बुद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुक क्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठयब्दानां मध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ महामांगल्यप्रदमासोत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवमुखे शेषेषु ग्रहेषु यथा यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्मा/वर्मा/गुप्तो वा अमुक संज्ञोऽहं सपरिवारममात्मनःश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलप्राप्त्यर्थं,

इहजन्मनि जन्मान्तरे वा कृतसकलदुरितोपशमनार्थ तथानिखिलभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा सिध्यर्थं ,आधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोप शमनार्थ धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिध्यर्थ श्री भवानी शंकरमहारुद्रप्रीत्यर्थं अमुक लिंगोपरि यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारै:द्रव्येण आवाहनादि षोडशोपचारै: पूजनपूर्वकं दुग्धधारया जलधारया वा अभिषेषकं करिष्ये। तदंगत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिध्यर्थ श्री गणेशाम्बिकयो: पूजनं च करिष्ये ।

हाथ में लिए गए पुष्प जलाक्षत को पृथ्वी पर छोड़ दें : -

गणपति पूजनम्

वैदिक मंत्र :- ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे
प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा
निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम
आहमजानिगर्भ धमात्वमजासि गर्भधम्।।

पौराणिक मंत्र :- गजाननंभूतगणादिसेवितं,
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

आगम मंत्र- आगच्छ भगवन् देव, स्थाने चात्र
स्थिरो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि, तावत्त्वं
सन्निधो भव ।। 1

लम्बोदर नमस्तुभ्यं, सततं
मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्वकार्येषु
सर्वदा ।। 2 ।।

ॐ गं गणपतये नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पं
समर्पयामि।

पूजन कर प्रार्थना करें।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।

गणेश का ध्यान

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।
ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीगणेशाय नमः।

गौरी पूजनम्

वै. मं :- ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्।।

पौ. मं :- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

आ॰ मंत्र-हेमाद्रितनया देवी वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

पूजन कर प्रार्थना करें-

ॐ अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गौरीदेव्यै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

उपलब्ध विविध उपचारों से गणेशाम्बिका पूजन के पश्चात्

दुर्गा का ध्यान

सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ।।
ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्रीदुर्गायै नमः ।

विष्णु का ध्यान

उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शङ्खं गदां पङ्कजं
चक्रं बिभ्रतमिन्दि ावयुमतीसंशोभितपार्श्वद्वयम् ।
कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै-
र्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे ।।
ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ विष्णवे नमः ।

सूर्य का ध्यान

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै-
र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ।।
ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॐ श्री सूर्याय नमः ।

सर्प पूजनम्

मंत्र :- नमोऽस्तु सर्पेम्यो ये के च पृथ्वी मनुयेऽअन्तरिक्षे ये
दिवि तेम्य : सर्पेभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री नागराजाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि-'ॐ शिवविष्णुगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।'

प्रार्थना :- असौयोवसर्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः।
उतैनंगोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः।।

पार्षदादिकों के पूजनोपरांत हाथ में बिल्वपत्र अक्षत और पुष्प लेकर भगवान् शिव का ध्यान करें :-

ध्यान :-

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

वै. मंत्र :- नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः। ध्यानार्थे बिल्वपत्रपुष्पाक्षतं समर्पयामि।

यदि पञ्चदेवोंकी मूर्तियाँ न हों तो अक्षत अथवा पूगीफल (सुपारी) पर इनका आवाहन करें। मन्त्र नीचे दिया गया है। निम्न कोष्ठक के अनुसार देवताओं को स्थापित करें-

शिव पञ्चायतन		
विष्णु		सूर्य
	शिव	
देवी		गणेश

	पू	
उ		द
	प	

आवाहन-आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिरा : समे।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ।।
ॐ शिवविष्णुगणेशसूर्यदुर्गाभ्यो नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प समर्पण करें)

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

आवाहनम्

वै. मं. :- त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

पौ. मं. :- आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्

वै. मं. :- या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।

पौ.मं. :- अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणन्वितम्।।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

आ० मं.-रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। आसनार्थे बिल्वपत्रादिकं समर्पयामि।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पाद्यम्

वै. मं. :- यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ७ सीः पुरुषं जगत्।।
पौ. मं. :- गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।
आ.मं. :- उष्णोदकं निर्मलं च, सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

वै. मं. :- शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ७ सुमना असत्।।
पौ. मं. :- गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्ध्यं सम्पादितं मया।
गृहाण भगवान् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव।।
आ.मं. :- तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्ध्यं कल्पयाम्यहम्।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्

वै. मं. :- अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्योऽधराचीः परासुव।।

पौ. मं. :- कपूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर।।

आ. मं. :- सर्वतीर्थसमायुक्त, सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

वै. मं. :- असौ यस्ताम्रोऽअरुण उत बभ्रुः सुमंगलः। ते चैन ꣳ
रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताःसहस्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे।।

पौ. मं. :- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

आ. मं. :- गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

द्वादश ज्योतिर्लिंगस्मरणम्

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारंममलेश्वरम्।।
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुकावने।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं, घुश्मेशं च शिवालये।।
एतानि ज्यातिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति।।

दुग्धस्नानम्

वै. मं. :- पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

पौ. मं. :- कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्।।

आ. मं. :- कामधेनुसमुत्पन्नं, सर्वेषा जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि। दुग्धस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दधिस्नानम्

वै. मं. :- दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्राणऽआयु ꣸ षितारिषत्।।

पौ. मं. :- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिनिभं।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

आ. मं. :- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। दधिस्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

घृतस्नानम्

वै. मं. :- घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृक्षभ वक्षि हव्यम्।

पौ. मं. :- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

आ. मं. :- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्

वै. मं. :- मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्तवोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसोम
मधुमत्पार्थिव ७ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

पौ. मं. :- पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

आ. मं. :- तरुपुष्पसमुद्भूतं, सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शर्करास्नानम्

वै. मं. :- अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्।
अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो
सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय
त्वा जुष्टतमम्।।

पौ. मं. :- इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

आ. मं. :- इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

वै. मं. :- पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पौ. मं. :- पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
आ. मं. :- पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्

वै. मं. :- अ ऌ शुना ते अ ऌ शुः पृच्चतां परुषा परुः।
गन्धेस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

पौ. मं. :- मलयाचलसम्भूत चन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

वै. मं. :- शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।
श्यतेः श्येताक्षोऽरुणेस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

पौ. मं. :- शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्।।

आ. मं. :- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

अभिषेकम्

मंत्र :- नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।
या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।
यामिषुंगिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ७ सीः पुरुषं जगत्।।
शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ७ सुमना असत्।।
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परा सुव।।
असौ यस्ताम्रोऽअरुण उत बभ्रुः सुमंगलः। ये चैन ७ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रंशो वैषाᳬहेड ईमहे।।
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।
नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। इत्यादि।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अभिषेक समर्पयामि। अभिषेकान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

विजया

वै. मं. :- विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ ३ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।

पौ. मं. :- शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभाव समन्वितम्।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्यादत्तं प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। विजयां स्नान समर्पयामि। विजयास्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

वै. मं. :- असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पौ. मं. :- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रं धृत्वा शान्ति प्रयच्छ मे।।

आ. मं. :-सर्वभूषाधिके सोम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नम:।
वस्त्रम समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

वै. मं. :- सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्व:।
वासोऽअग्ने विश्वरुप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

पौ. मं. :- उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नम:।
उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

वै. मं. :- ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विविसीमत: ।
सुरुचोवेन ऽआव: स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठा:
सताश्च योजिमसतश्च विव:।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पौ.म. :- नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आ.मं. :- नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम्

वै.मं. :- ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिश्यभ्च वो नमो नमो
भवाय च रुद्राय च। नमः शर्वाय च पशुपतये च
नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।।

पौ.म. :- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

आ.मं. :- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। (गन्धं सम.)

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अक्षतम्

वै.मं. :- ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठ्यामती
योजानिन्वन्द्रतेहरी।।

पौ.म. :- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुंङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

अ. मं. :- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुंङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

विभूतिम्

वै.मं. :- त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपश्च त्र्ययायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्ययायुषम्।।

पौ.म. :- सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। विभूतिं समर्पयामि।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पुष्पं पुष्पमालाम्

वै.मं. :- नमःपार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय
चोत्तरणायच।
नमस्तीर्थ्याय च कूल्यायच नमः शष्प्याय च फेन्याय च।।

पौ.मं. :- नाना पंकज पुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि।
बिल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम्।।

आ.मं. :- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्!

वै.मं. :- नमो बिल्विने च कवचिने च नमो वर्मिणे च
वरूथिने च।
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय
चाहनन्याय च।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पौ.मं. :- त्रिदलं त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवापर्णम्।।

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारमेकबिल्वं शिवापर्णम् ।।१।।
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च्र अच्छिद्रैः कोमलैस्तथा।
शिवपूजां करिष्यामि एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२।।
अखण्डबिल्वपत्रेण पूजितं नन्दिकेश्वरम्।
शुध्यते सर्वपापेभ्य एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३।।
शालिग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत।
सोमयज्ञमहादानमेकबिल्वं शिवार्पणम्।।४।।
दन्तिकोटि सहस्त्राणि अश्वमेध शतानि च।
कोटिकन्या महादानमेकबिल्वं शिवार्पणम्।।५।।
लक्ष्म्याश्च स्तन उत्पन्नं महादेव सदाप्रियम्।।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि एकबिल्वं शिवापर्णम्।।६।।
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।।
अघोर पाप संहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।।७।।

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णूरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८।।
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ।।९।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
अखंडबिल्वपत्रं समर्पयामि।

तुलसीमज्जरीम्

वै.मं. :- इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्यपा ꣳ सुरे स्वाहा।।
पौ.मं. :- तुलसीं हेमरूपा च रत्नरूपां च मज्जरीं।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यं अर्पयामि हरिप्रियाम्।।
आ.मं. :- तुलसी हेमरूपांच रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
तुलसी मञ्जरीं समर्पयामि।

दूर्वा

वै.मं. :- कांण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

पौ.मं. :- दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

आ.मं. :- विष्णवादि सर्वदेवानां, दूर्वे त्वं प्रीतिदा यतः।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
दूर्वादलान् समर्पयामि।

शमी पत्रम्

वै.मं. :- अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा
गृह्णामि।बृवहद्ग्रावासि वनस्पतयः सऽइदं
देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीस्व।।
हविष्कृदेहि - हविष्कृदेहि।।

पौ.मं. :- अमंगलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यामर्पयेऽहं शमीं शुभाम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। शमीपत्रं च समर्पयामि।

आभूषणम्

वै.मं. :- युवं तमीन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः
पृतन्यादपतन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतं दूरे
चत्ताय छनत्सद् गहनं चदिनक्षत्।।

पौ.मं. :- वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ताविद्रुममण्डितम्।।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रति गृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। रत्नाभूषणं समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य

वै.मं. :- त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

पौ.मं. :- चम्पकाशोक वकुलं मालती मोगरादिभिः
वासितं स्निग्धतासेतुं तैलं चारु प्रगृह्यताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। सुगंधितद्रव्यं समर्पयामि।

नाना परिमलद्रव्यम्

वै.मं. :-अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ७ सं परिपातु विश्वतः।।

पौ.म. :- अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्। नाना परिमल द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। नाना परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्

वै.मं. :- सिन्धोरिवप्रादध्वनेशूघनासोवातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। धृतस्य धाराऽरुषोनवाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

पौ.मं. :- सिन्दुरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। सिन्दूरं समर्पयामि।

धूपम्

वै.मं. :- नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः
सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च।
नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो
मीढुष्टमाय चेषुमतेच।।

पौ.म. :- वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

आ.मं. :- वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

वै.मं. :- अग्निर्ज्योज्योतिर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा
सूर्योज्योतिज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो
ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

पौ.म. :- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

आ.मं. :- आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि। दीप दर्शनान्ते हस्तं प्रक्षाल्य नैवेद्यं निवेदयेत।

नैवेद्यम्

वै.मं. :- नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च।
नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।

पौ.मं. :- शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।

आ.मं. : -शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

मध्येपानीयं - अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया।
त्वयि तृप्ते जगत् तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। नैवेद्यापूर्वक जलं समर्पयामि।

इस मंत्र से भोग को भगवान के सामने रखकर बिल्वपत्र, तुलसीदल या पुष्प उसमें डालकर शिवगायत्री या पंचाक्षर मंत्र से प्रोक्षण करके नीचे के मंत्र से ग्रासमुद्रा दिखावें।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ पञ्च प्राणेभ्यः स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपचदेवताभ्यो नमः। ततः तालीत्रयं कुर्यात्। मध्ये मध्ये जलमुत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनार्थ मुखप्रक्षालनार्थं च जलम् समर्पयामि।

ऋतुफलम्

वै.मं. :- याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्व ꣳ हसः।

पौ.मं. :- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

आ. मा. :- फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मानि जन्मानि ।।

आचमनीयजल मन्त्र :- गंगाजलं समानीतं
सुवर्णकलशस्थितम्।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। ऋतुफलं निवेदायामि। मध्ये मध्ये आचमनीयं जलं उत्तरापोशन च समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्

वै.मं. :- त्वाँ गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।
पौ.मं. :- मलयाचल समुद्भूत चन्दनागरुसम्भवम्।
चन्दनं देवदेवेश करोद्वर्तनार्थं प्रगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। करोद्वर्तनं समर्पयामि।

धतुर फलम्

वै.मं. :- कार्षिरस्य समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधिभिरोषधीः।
पौ.मं. :- धीर धैर्य परिक्षार्थं धारितं परमेष्ठिना।
धतूरं कण्टकीर्णं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। धतूरफलं समर्पयामि।

अखण्ड ऋतु फलम्

वै.मं. :- इमारुद्राय तवसे कपर्दिने
क्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः।
यथा शमसद्‌द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टं
ग्रामेअस्मिन्ननातुरम्।।

पौ.मं. :- कूष्माण्डं मातुलुंगश्च नारिकेल फलानि च।
रम्याणि पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अखण्ड ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

वै.मं. :- ॐ नमस्ते आयुधयानातंताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।

पौ.मं. :- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलालवंग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

आ.मं. :- पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

द्रव्य दक्षिणा

वे.मं. :- हिरण्यगर्ब्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय
हविषाव्विधेम।।
पौ.मं. :- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलद!मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
आ.मं. :- न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे।
दक्षिणां कांचनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः।।
ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो
नमः।कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।
विशेष सूचना : -
सविधिपूजन के लिए सांगपूजन आवश्यक होता है। अतः

नीचे सांग पूजन दिया जाता है। गंधाक्षत पुष्प से पूजन करें।

१.	ॐ ईशानाय नमः	पादौ पूजयामि।
२.	ॐ शंकराय नमः	जंघे पूजयामि।
३.	ॐ शूलपाणये नमः	गुल्फौ पूजयामि।
४.	ॐ शाम्भवे नमः	कटौ पूजयामि।
५.	ॐ स्वयंभुवे नमः	गुह्ये पूजयामि।
६.	ॐ महादेवाय नमः	वाम पार्श्वे पूजयामि।
७.	ॐ विश्व कर्त्रे नमः	उदरे पूजयामि।
८.	ॐ सर्वतोमुखाय नमः	दक्षिण पार्श्वे पूजयामि।
९.	ॐ स्थाणवे नमः	स्तनौ पूजयामि।
१०.	ॐ नीलकण्ठाय नमः	कंठे पूजयामि।
११.	ॐ शिवात्मने नमः	मुखे पूजयामि।
१२.	ॐ त्रिनेत्राय नमः	नेत्रे पूजयामि।
१२.	ॐ नागभूषणाय नमः	शिरसि पूजयामि।
१३.	ॐ देवाधिदेवाय नमः	सर्वांगे पूजयामि।

आवरण पूजनम्

१. ॐ अघोराय नमः
२. ॐ पशुपतये नमः
३. ॐ शिवाय नमः
४. ॐ विरुपाय नमः
४. ॐ विश्वरूपाय नमः
६. ॐ त्र्यंबकाय नमः
७. ॐ भैरवाय नमः
८. ॐ कपर्दिने नमः
९. ॐ शूलपाणये नमः
१०. ॐ ईशानाय नमः
११. ॐ महेश्वराय नमः

एकादश शक्तिपूजनम्

१. ॐ उमायै नमः
२. ॐ गौर्यै नमः
३. ॐ काल्यै नमः
४. ॐ कालिन्द्यै नमः
४. ॐ कोटिदेव्यै नमः
६. ॐ विश्वधारिण्यै नमः
७. ॐ ह्रां नमः
८. ॐ ह्रीं नमः
९. ॐ विश्वमातरे नमः
१०. ॐ शिवायै नमः
११. ॐ विश्वेश्वर्यै नमः (गंगादेव्यै नमः)

गण पूजनम्

१. ॐ गणपतये नमः

२. ॐ कार्तिकेयाय नमः

३. ॐ पुष्पदन्ताय नमः

४. ॐ कपर्दिने नमः

४. ॐ भैरवाय नमः

६. ॐ शूलपाणये नमः

७. ॐ ह्रां ईश्वराय नमः

८. ॐ ह्रीं दण्डपाणये नमः

९. ॐ नन्दिने नमः

१०. ॐ महाकालाय नमः

अष्टमूर्तिपूजनम्

१. एते गन्धपुष्पे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः (पूर्व)
२. एते गन्धपुष्पे ॐ भवाय जलमूर्तये नमः (ईशान)
३. एते गन्धपुष्पे ॐ रद्राय अग्निमूर्तये नमः (उत्तर)
४. एते गन्धपुष्पे ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः (वायव्य)
५. एते गन्धपुष्पे ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः (पश्चिम)
६. एते गन्धपुष्पे ॐ पशुपतये सोममूर्तये नमः (नैर्ऋत्य)
७. एते गन्धपुष्पे ॐ महादेवाय सूर्यमूर्तये नमः (दक्षिण)
८. एते गन्धपुष्पे ॐ ईशानाय जीवमूर्तये नमः (अग्निकोण)

एकादश रुद्रपूजनम्

१. ॐ अघोराय नमः
२. ॐ पशुपतये नमः
३. ॐ शर्वाय नमः
४. ॐ विरुपाक्षाय नमः
५. ॐ विश्वरूपिणे नमः
६. ॐ त्र्यम्बकाय नमः
७. ॐ कपर्दिने नमः
८. ॐ भैरवाय नमः
९. ॐ शूलपाणये नमः
१०. ॐ ईशानाय नमः
११. ॐ महेश्वराय नमः

पंचवक्त्र पूजनम्

१. ॐ पश्चिम वक्त्राय नमः
२. ॐ उत्तर वक्त्राय नमः
३. ॐ दक्षिण वक्त्राय नमः
४. ॐ पूर्व वक्त्राय नमः
५. ॐ उर्ध्व वक्त्राय नमः

आरार्तिक्यम्

वै.मं. :- ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्याम ध्येकादशस्थ।

अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं
जुषध्वम्।।

पौ.मं. :- कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरातिक्यमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।आरार्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पांज्जली

वै.मं. :- ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि
मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधी
र्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।

पौ.म. :- सेवान्तिकाबकुल चम्पक पाटलाब्जेः
पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः।
बिल्वप्रवाल तुलसी दल मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वर विश्वनाथ।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो
रुद्रः प्रचोदयात्।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा

वै.मं. :- ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्तानिषंगिणः।
तेषा ꣳ सहस्त्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

पौ.मं. :- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विष्णु नमस्कारः

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणं।
सहारवक्षस्थल शोभिकौस्तुभं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भजम्।।

शिवनमस्कार :

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।

दुर्गा नमस्कार :

सर्वमंङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।

सूर्य नमस्कार :

ओम नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे
जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे
विरञ्चि नारायण शङ्करात्मने।

इसके बाद नवग्रहों को निम्न श्लोक से नमस्कार करें।

नवग्रह नमस्कार

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।

गुरु नमस्कार

गुरु की मूर्ति अथवा छायाचित्र (फोटो) पर चन्दन, पुष्प अर्पण करें तथा धूप, दीप दिखावें और नीचे लिखे मन्त्र से नमस्कार करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरूदेवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।
श्री गुरवे नमः, श्री परमगुरवे नमः,
श्री परमेष्ठिगुरवे नमः।

शिवपार्षद पूजनम्

बाणरावण चण्डीच नन्दी भृंगी जटाधरः।
सदाशिव प्रसादेन सर्वे क्रन्दन्तु शाम्भवाः।।

ॐ भूर्भुवः सुवः। देवं सवितः प्रसुव। सत्यं त्वर्चेन परिसिञ्चामि अमृतोपस्तरणमसि। ओम् प्राणाय स्वाहा, ओम् अपानाय स्वाहा, ओम् व्यानाय स्वाहा, ओम् उदानाय स्वाहा, ओम् समानाय स्वाहा।अमृतं नैवेद्यं निवेदयामि। गृहाण परमेश्वर। (प्रसाद को चारों ओर जल घुमा कर छोड़ दें।)

मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि (आचमनी से जल दें।)

आचमनीयं समर्पयामि-जल छोड़े।

यं रं लं बं हं पुष्पाञ्जलि समर्पयामि-फूल दें।

नमस्करोमि-यहाँ अपने इष्ट को नमस्कार श्लोक पढ़कर अथवा हाथ जोड़कर या साष्टाङ्ग नमस्कार पूर्वक प्रणाम करें।

प्रार्थना

तस्मै नमः परमकारणकारणाय
    दीप्तोज्ज्वलज्ज्वलित पिंगल लोचानाय।
नागेन्द्रहार कृत कुण्डलभूषणाय
    ब्रह्मादिदेव वरदाय नमः शिवाय
नमः शिवाय शांताय सगुणाय नमो नमः।

इस मंत्र सं भगवान शिव के पार्षदों को गन्धाक्षतादि समपर्ण करें।

अब अपने इष्ट की पूजा कीजिए।

श्री परमात्मानं आवाहयामि (आवाहन करें)

श्री परमात्मने आसनं समर्पयामि (फूल या अक्षत चढ़ावें)

पादयोः पाद्यं, हस्तयोरर्घ्यं, मुखे आचमनीयं समर्पयामि (आचमनी से पैरों, हाथों, एवं मुख के सामने दर्शाकर कटोरी में छोड़ें।)

स्नपयामि (स्नानं समर्पयामि) मूर्ति हो तो स्नान करावे फोटो हो तो जल को आरती के सामने घुमाकर कटोरी में छोडें।

वस्त्रं उपवस्त्रं च समर्पयामि (वस्त्र, मौली, फूल या अक्षत चढावें)।

पंचोपचार पूजा

1. **लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि** (गध और कुंकुम दें)
2. **हं आकाशात्मने पुष्पाणि समर्पयामि।** (पुष्प अर्पण करें)
3. **यं वाय्वात्मने धूपं आघ्रापयामि** (धूप दिखावें)
4. **रं वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि** (दीप दिखावें)
5. **वं अमृतात्मने नैवेद्यं निवेदयामि**

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ भूर्भुवः सुवः। देवं सवितः प्रसुव। सत्यं त्वर्चेन परिसिञ्चामि अमृतोपस्तरणमसि। ओम् प्राणाय स्वाहा, ओम् अपानाय स्वाहा, ओम् व्यानाय स्वाहा, ओम् उदानाय स्वाहा, ओम् समानाय स्वाहा।अमृतं नैवेद्यं निवेदयामि। गृहाण परमेश्वर! (प्रसाद को चारों ओर जल घुमा कर छोड़ दें।)

मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि (आचमनी से जल दें।)

आचमनीयं समर्पयामि-जल छोड़े।

यं रं लं बं हं पुष्पाञ्जलि समर्पयामि-फूल दें।

नमस्करोमि-यहाँ अपने इष्ट को नमस्कार श्लोक पढ़कर अथवा हाथ जोड़कर या साष्टाङ्ग नमस्कार पूर्वक प्रणाम करें।

प्रार्थना

तस्मै नमः परमकारणकारणाय
    दीप्तोज्ज्वलज्ज्वलित पिंगल लोचानाय।
नागेन्द्रहार कृत कुण्डलभूषणाय
    ब्रह्मादिदेव वरदाय नमः शिवाय
नमः शिवाय शांताय सगुणाय नमो नमः।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सर्वेश्वराय देवाय कार्य कारण हेतवे।।
निवेदयामि चात्मानं त्वं गति परमेश्वर।
भूमौ स्खलित पादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयिजातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्

रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षकः।
भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
वरदं त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदम्।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।
विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

क्षमापनम्

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।।

यदऽक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जनामि क्षम्यतां परमेश्वर।।
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीसाम्बसदाशिवादिपञ्चदेवताभ्यो नम:।
क्षमा प्रार्थना पूर्वक साष्टांग प्रणिपातं समर्पयामि।

समर्पणम्

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहे।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो।
यद्यत्कर्म करोति तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।
(तत्पश्चात् शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र का पाठ करते हुए बिल्वपत्र चढ़ावें)

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः
शिवाय ।।१।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' कराय नमः
शिवाय ।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि'काराय नमः
शिवाय ।।३।।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमाय मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' कराय नमः
शिवाय ।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' कराय नमः
शिवाय ।।५।।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

आत्म निवेदन

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयजनं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।१।।

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे,
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे,
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं
कर्मभिः ।।२।।

पुष्पांजलिः

हरिः ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

ॐ राजधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।
नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च
पुष्पाञ्जलि मया दत्तं गृहाण परमेशवर ।।

पुष्पांजलि अर्पण कर प्रणाम करें । बैठकर महिम्नः स्तोत्र का पाठ करें –

।। ॐ शिवाय नमः।।

श्री शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

।। ॐ श्री गणेशाय नमः ।।

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ।।

श्री पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येषः स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्.मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् कि वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयी वस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।

अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।।४।।

किमीहः कि कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ।।५।।
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।७।।

महोक्षः खट्वाङ्.गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।

सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।।८।।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदंति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कंधवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।।१०।।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जि तमिदम् ।।११।।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।

अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ।।१२।।

यदृध्दि सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कर्स्या प्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ।।१३।।
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ।।१४।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ।।१५।।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।

मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।।१६।।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ।।१७।।
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्.गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खुल परतन्त्राः प्रभुधियः ।।१८।।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।१९।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।

अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रध्दां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ।।२०।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रध्दाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।।२१।।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यात दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।२२।।

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ।।२३।।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ।।२४।।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ।।२५।।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।।२६।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।।२७।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरित देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ।।२८।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दवष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ।।२९।।

वपुष्प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनिपुरा,
पुरारे न क्वापि क्षणमपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यहमतनुरग्रेऽप्यनतिमान् ।
इतीश क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि ।।३०।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।३१।।

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्वचेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्-
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।३२।।

असितागिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।। ३३।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो,
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।३४।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमाँश्च ।।३५।।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।३६।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।।३७।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३८।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्,
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।३९।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।४०।।
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्.कजनिर्गतेन, ।
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ।।

कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।४१।।

इत्येषा वाङ्.मयीपूजा श्रीमच्छङ्.करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ।।४२।।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।४३।।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।।४४।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।४५।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

।। शिवार्पण अस्तु ।।

शिवस्तोत्राणि

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामि शमीशाननिर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।।१।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोऽतीतमीशं गिरीशं ।

हे मोक्षस्वरूप, विभु, व्यापक, ब्रह्म और वेदस्वरूप, ईशान दिशाके ईश्वर तथा सबके स्वामी श्रीशिवजी! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। निजस्वरूप में स्थित (अर्थात् मायादिरहित), [मायिक] गुणों से रहित, भेदरहित, इच्छारहित, चेतन आकाशरूप एवं आकाश को ही वस्त्र रूप में धारण करने वाले दिगम्बर [अथवा आकाश को भी आच्छादित करने वाले], आपको मैं भजता हूँ ।।१।। निराकार, ओङ्कारके मूल, तुरीय (तीनों गुणों से अतीत), वाणी, ज्ञान और इन्द्रियोंसे परे, कैलाशपति, विकराल, महाकालके भी काल, कृपालु,

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ।।२।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ।।३।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।४।।

गुणों के धाम, संसारसे परे आप परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ ।।२।। जो हिमाचल के समान गौरवर्ण तथा गम्भीर हैं, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों की ज्योति एवं शोभा है, जिनके सिरपर सुन्दर नदी गङ्गाजी विराजमान है, जिसके ललाटपर द्वितीयाका चन्द्रमा और गले में सर्प सुशोभित है ।।३।। जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, सुन्दर भ्रुकुटी और विशाल नेत्र हैं, जो प्रसन्नमुख, नीलकण्ठ और दयालु हैं, सिंहचर्मका वस्त्र धारण

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।५।।

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।६।।

किये और मुण्डमाला पहने हैं, सबके प्यारे और सबके नाथ [कल्याण करने वाले] उन श्री शंकरजी को मैं भजता हूँ ।।४।। प्रचण्ड (रुद्ररूप) श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यो के समान प्रकाशवाले, तीनो प्रकारके शूलों (दु:खो) को निर्मूल करने वाले, हाथ में त्रिशूल धारणकिये हुए, भाव (प्रेम) के द्वारा प्राप्त होने वाले भवानी के पति श्रीशंकरजी को मैं भजता हूँ,।।५।। कलाओं से परे, कल्याणस्वरूप, कल्पका अन्त (प्रलय) करने वाले, सज्जनोंको सदा आनन्द देने वाले, त्रिपुर के शत्रु, सच्चिदानन्दघन, मोहको हर ने वाले, मन को मथ डालनेवाले, कामदेव

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।९।।
इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

भगवान् रुद्रकी स्तुतिका यह अष्टक उन शंकरजी की तुष्टि (प्रसन्ता) के लिये ब्राह्मणद्वारा कहा गया। जो मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं, उनपर भगवान् शम्भु प्रसन्न होते हैं ।।९।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं
भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।७।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्न मामीश शंभो ।।८।।

के शत्रु, हे प्रभो! प्रसन्न होजाये, प्रसन्न होजाये ।।६।। हे पार्वती के पति! जबतक आपके चरणकमलों को मनुष्य नहीं भजते, तबतक उन्हें न तो इहलोक और परलोक में सुख-शान्ति मिलती है और न उनके तापोंका नाश होता है। अतः हे समस्त जीवों के अंदर (हृदय में) निवास करने वाले प्रभो! प्रसन्न होजायें ।।७।। मैं न तो योग जानता हूँ, न जप और न पूजा ही। हे शम्भो! मैं तो सदा-सर्वदा आपको ही नमस्कार करता हूँ।हे प्रभो! बुढ़ापा तथा जन्म [मृत्यु] के दुःखसमूहोंसे जलते हुए मुझ दुःखीकी दुःख में रक्षा कीजिये! हे शम्भो! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।।८।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।९।।

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

भगवान् रुद्रकी स्तुतिका यह अष्टक उन शंकरजी की तुष्टि (प्रसन्नता) के लिये ब्राह्मणद्वारा कहा गया। जो मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं, उनपर भगवान् शम्भु प्रसन्न होते हैं ।।९।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ।।१।।
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।।२।।

हे दयानिधे ! हे पशुपते ! हे देव ! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जलसे स्नान, नाना रत्नावलीविभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिका गन्धसमन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्रसे रचित पुष्पाञ्जलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक (पूजोपहार) ग्रहण कीजिये ।।१।। मैंने नवीन रत्नखण्डोंसे रचित सुवर्णपात्रमें घृतयुक्त खीर, दूध और दधिसहित पाँच प्रकार का व्यञ्जन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूरसे सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल-ये सब मनके द्वारा बनाकर प्रस्तुत किये हैं; प्रभो ! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये ।।२।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ।।३।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।४।।

छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदङ्ग, दुन्दुभि के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टाङ्ग प्रणाम, नानाविध स्तुति-ये सब मैं सङ्कल्पसे ही आपको समर्पण करता हूँ। प्रभो ! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये ।।३।। हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वतीजी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय-भोग की रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है, मेरा चलना-फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र है, इस प्रकार मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ, वह सब आपकी आराधना ही है ।।४।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा

श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व

जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।५।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता ।

प्रभो ! मैने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हों; वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको आप क्षमा कीजिये । हे करुणासागर श्रीमहादेव शंकर! आपकी जय हो ।।५।।

शिवापराधक्षमापनस्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसङ्गात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां,
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्कथयति नितरां जाठरो जातवेदाः ।
यद्यद् वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।।1।।

पहले कर्मप्रसङ्गसे किया हुआ पाप मुझे माताकी कुक्षिमें ला बिठाता है, फिर उस अपवित्र विष्ठा-मूत्रके बीच जठराग्नि खूब संतप्त करता है। वहाँ जो-जो दुःख निरन्तर व्यथित करते रहते हैं उन्हें कौन कह सकता है? हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! ।।१।।
बाल्यावस्था में दुःख की अधिकता रहती थी, शरीर मल-मूत्र से लिथड़ा रहता था और निरन्तर स्तनपानकी लालसा रहती थी, इन्द्रियोंमें कोई कार्य करने की सामर्थ्य न थी, शैवी मायासे उत्पन्न हुए नाना जन्तु मुझे काटते थे, नाना रोगादि दुःखों के कारण मैं रोता ही रहता था, (उस समय भी) मुझसे शंकर का स्मरण

बाल्ये दु:खातिरेको मललुलितवपु: स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदु:खाद्रुदनपरवश: शङ्करं न स्मरामि ।
क्षन्तव्यो० ।२।
प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरै: पञ्चभिर्मर्मसन्धौ,
दष्टो नष्टो विवेक: सुतधनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्ण: ।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं ।
क्षन्तव्यो० ।३।

नही बना, इसलिये हे शिव ! हे शिव ! हे शंकर ! हे महादेव ! है शम्भो ! अब मेरा अपराध क्षमा करो ! क्षमा करो ! ।।२।। जब मैं युवा-अवस्थामें आकर प्रौढ़ हुआ तो पाँच विषयरूपी सर्पो ने मेरे मर्म स्थानों में डँसा, जिससे मेरा विवेक नष्ट हो गया और मैं धन, स्त्री और संतान के सुख भोगने में लग गया। उस समय भी आपके चिन्तन को भूलकर मेरा हृदय बड़े घमण्ड और अभिमान से भर गया। अत: हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।३।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम् ।
मिथ्यामोहाभिलाषेर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यम् ।
क्षन्तव्यो० ।।४।।

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे।
नास्थाधर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यम्।
क्षन्तव्यो ।।५।।

वृद्धावस्था में भी जब इन्द्रियोंकि गति शिथिल हो गयी है, बुद्धि मन्द पड़ गयी है और आधिदैविकादि तापों, पापों, रोगों और वियोगोंसे शरीर जर्जरित हो गया है, मेरा मन मिथ्या मोह और अभिलाषाओंसे दुर्बल और दीन होकर (आप) श्रीमहादेव ही के चिन्तन से शून्य ही भ्रम रहा है। अतः हे शिव ! हे शिव ! हे शंकर ! हे महादेव ! हे शम्भो ! अब मेरा अपराध क्षमा करो ! ।।४।। पद-पदपर अतिगहन प्रायश्चित्तोंसे व्याप्त होने के कारण मुझसे तो स्मार्तकर्म भी नहीं हो सकते, फिर जो द्विजकुलके लिये विहित हैं, उन ब्रह्मप्राप्ति के मार्गस्वरूप श्रौतकर्मोकी तो बात ही क्या है? धर्म में आस्था नहीं है और श्रवण-मननके विषय में विचार ही नहीं होता, निदिध्यासन (ध्यान) भी कैसे

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थम्।
क्षन्तव्यो० ।।६।।

किया जाय? अतः हे शिव ! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।५।।

प्रात:काल स्नान करके आपका अभिषेक करने के लिये मै। गङ्गाजल लेकर प्रस्तुत नही हुआ, न कभी आपकी पूजा के लिये वन से बिल्वपत्र ही लाया और न ही आपके लिये तालाब में खिले हुए कमलों की माला तथा गन्ध-पुष्प ही लाकर अर्पण किया। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।६।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः।
क्षन्तव्यो॰ ।।७।।

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रजतपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः।
क्षन्तव्यो॰ ।।८।।

मधु, घृत, दधि और शर्करायुक्त दूध (पञ्चामृत) से मैंने आपके लिङ्ग को स्नान नहीं कराया, चन्दन आदि से अनुलेपन नहीं किया, धतूरे के फूल, धूप, दीप, कपूर तथा नाना रसों से युक्त नैवेद्यों द्वारा पूजन भी नहीं किया। अत: हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।७।। मैंने चित्तमें शिव नामको स्मरण करके ब्राह्मणों को प्रचुर धन नही दिया; न आपके बीजमन्त्रोंद्वारा अग्निमें एक लक्ष आहुतियाँ दी और न व्रत एवं जपके नियमसे तथा रुद्रजाप और वेदविधिसे गङ्गातटपर कोई साधना ही की। अत: हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।८।।

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरुपे पराख्ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि ।
क्षन्तव्यो० ।।९।।

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यवस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि।
क्षन्तव्यो० १०

जिस सूक्ष्ममार्गप्राप्य सहस्त्रदल-कमल में पहुँचकर प्राणसमूह प्रणवनादमें लीन हो जाते हैं और जहाँ जाकर वेद के वाक्यार्थ तथा तात्पर्यभूत पूर्णता आविर्भूत ज्योतिरूप शान्त परमतत्त्वमें लीन हो जाता है, उस कमल में स्थित होकर मैं सर्वान्तर्यामी कल्याणकारी आपका स्मरण नहीं करता हूँ। अत: हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।९।।

नग्न, नि:सङ्ग, शुद्ध और त्रिगुणातीत होकर, मोहान्धकारका ध्वंस कर तथा नासिकाग्रमें दृष्टि स्थिर कर मैंने (आप) शंकर

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ।।११।।

के गुणों को जानकर कभी आपका दर्शन नहीं किया और न उन्मनी-अवस्थासे कलिमलरहित आपके कल्याणस्वरूपका स्मरण ही करता हूँ। अतः हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो! ।।१०।। चन्द्रकलासे जिनका ललाट-प्रदेश भाषित हो रहा है, जो कन्दर्पदर्पहारी है, गङ्गाधर है, कल्याणस्वरूप है, सर्पोंसे जिनके कण्ठ और कर्ण भूषित है, नेत्रोंसे अग्नि प्रकट हो रहा है, हस्तिचर्मकी जिनकी कन्था है तथा जो त्रिलोकी के सार है, उन शिव में मोक्ष के लिये अपनी सम्पूर्ण चित्तवृत्तियोंको लगा दे; तो, और कर्मों से क्या प्रयोजन है? ।।११।।

किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वती
वल्लभम् ।।१२।।
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना ।।१३।

इस धन, घोड़े, हाथी और राज्यादिकी प्राप्तिसे क्या? पुत्र, स्त्री, मित्र, पशु, देह और घरसे क्या? इनको क्षणभङ्गुर जानकर रे मन! दूरहीसे त्याग दे और आत्मानुभवके लिये गुरुवचनानुसार पार्वतीवल्लभ श्रीशंकर का भजन कर ।।१२।। देखते-देखते आयु नित्य नष्ट हो रही है, यौवन प्रतिदिन क्षीण हो रहा है, बीते हुए दिन फिर लौटकर नहीं आते, काल सम्पूर्ण जगत् को खा रहा है। लक्ष्मी जलकी तरङ्गमालाके समान चपल है; जीवन बिजली के समान चञ्चल है; अतः मुझ शरणागत की हे

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।१४।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

शरणागतवत्सल शंकर! अब रक्षा करो! रक्षा करो!।।१३।।
हाथ से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कर्ण से, नेत्रों से अथवा मनसे भी जो अपराध किये हों, वे विहित हों अथवा अविहित-उन सबको हे करुणासागर महादेव शम्भो! क्षमा कीजिये। आपकी जय हो, जय हो ।।१४।।

अथ श्री शिव परिवार पूजन विधिः

[पवित्र होकर आचमन प्रणायाम करने के बाद संकल्प के अन्त में 'श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थ गणपत्यादि-सकल देवता पूजनपूर्वक श्री भवानीशंकरपूजनं करिष्ये।' ऐसा कहकर संकल्प छोड़े। नीचे लिखे आवाहन मन्त्रों से मूर्तियों के समीप पुष्प छोडें। मूर्ति न हो तो सुपारी में आवाहन करके पूजन करें।]

गणेशाम्बिका- पूजन

गणपति पूजन- आवाहयामि पूजार्थ रक्षार्थ च मम क्रतो:।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष में।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

प्रार्थना - लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

पार्वती पूजन-हिमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाभ्यहम्।।
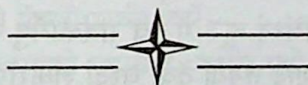
पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

नन्दीश्वर-पूजन

आयं गौ: पृश्निनक्रमीदसदन्मातरं पुर:।
पितरञ्च प्रयन्त्स्व:।।
पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभ: पृत्वा।
भरन्नग्निपुरीष्यं मा पाद्यायुष: परा ।।

वीरभद्र-पूजन

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ष्ठसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु: ।।
पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्राराति: सुभग भद्रो अध्वर:।
भद्रा उत प्रशस्तय:।।

स्वामि कार्तिकेय -पूजन

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्राद्बुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्थ बाहू उपस्तुत्यंमहि जातं ते अर्वन्।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तत्र इन्द्रो
बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्ववाहा शर्म यच्छतु।।

कुबेर पूजन

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्ति यजन्ति।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावंतः सचेमहि।।

कीर्तिभुख पूजन

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा
गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा
शूपायस्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा

मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ओजश्च मे सहश्च मे आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परुथ्ष्षि च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन करें, पश्चात् शिव-पूजन करें-

पाद्यं-ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्रक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं नमः ।। पा० स०

अर्घ्यं-ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टप्पंक्त्या सह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ।। अ० स०

आचमनं-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ।। आ० स०

स्नानं-ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो
वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
ऋतसदनमासीद ।। स्नानं समर्पयामि।

दुग्धस्नानं-गोक्षीरधामन् देवेश! गोक्षीरेण मयाकृतम्।
स्नपनं देवदेवेश! गृहाण शिवशंकर।।

दु॰ स॰, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि

दधिस्नानं-दध्ना चैव मया देव! स्नपनं क्रियते तव।

गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्ने भवाव्यय!।।

द॰ स॰, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि

घृतस्नानं-सर्पिषा देवदेवेश! स्नपनं क्रियते मया।

उमाकान्त! गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम!।।

घृ॰ स्ना॰, पुनर्जलस्नानं समर्पयामि

मधुस्नानं-इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च।

गृहाण शम्भो! त्वं भक्त्या मम शातिप्रदो भव।। म॰ स॰

शर्करास्नानं-सितया देवदेवेश! स्नपनं क्रियते मया।

गृहाण शंभो! मे भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव।। श॰ स॰

पञ्चामृतसनानं-पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि समन्वितम्।

घृतं मधु शर्करया स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। पं॰ स्नानं स॰

शुद्धोदक स्नांन-ॐ शुद्धवाला: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त

आश्विना: श्येत: श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा

अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:।।

शुद्ध स्नानं समर्पयामि, तत्पश्चात् दुग्धमिश्रित जल अथवा

केवल जल धारा से अभिषेक करें।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

रुद्राभिषेक

(जलधारा छोड़े)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो ते इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ।१। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापनाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरीशन्ताभिचाकशीहि ।२। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यतवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंꣳसी: पुरुषञ्जगत् ।३। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमना असत् ।४। अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीश्च सर्वाञ्जम्भयन् सर्वांश्यच यातुधान्योऽधराची: परासुव ।५। असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रु: सुमङ्गल:। ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता: सहस्त्रशोऽवैषा ꣳ हेड ईमहे ।६। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित:। उतैनङ्गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य: स दृष्टो मृडयाति न:।७। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्रक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नम:।८। प्रमुंच धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम। याश्च तै हस्त इषव: पराता भगवो वप ।९। विज्यन्धनु: कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत। अनेशन्नस्य या

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ।१०। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ।११।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवावे अस्मन्निधेहि तम्।१२। अवतत्य ध्नुष्ट्वछसहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानाम्मुखाः शिवो नः सुमना भव।१३। नमस्ते आयुधाया नातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ।१४। मानो महान्तमुत मा नो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुत पर न उक्षितम्। म नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ।१५। मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।१६।। अभिषेकं समर्पयामि

विजया-ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बणवाँ २ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ।।
वि॰ स॰

वस्त्रोपवस्त्र-ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् याश्च
ते हस्त इषवः पराता भगवो वप। वस्त्रं स॰।
उपवस्त्रंस॰

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यज्ञोपवीत-ॐब्रह्मा जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विश्वः। य० स० आचमनम् समर्पयामि

गन्धुं-ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च। गन्धं समर्पयामि

अक्षतं-ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च अ० स०

पुष्पं-ॐ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च। पुष्पं समर्पयामि

पुष्पमाला - नानापंकजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि। विल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम् ।। पु मा० स०

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बिल्वपत्रं-ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च
वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो
दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ।१।

काशीवासी निवासी च कालभैरव पूजनम्। प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।२। दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।३। त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।४। अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूज्ये शिवशंकरम्। कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवापर्णम्।।५।।

गृहाण बिल्वपत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय ।६।
बिल्वपत्राणि समर्पयामि नमः।।

तुलसी मंजरी-ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरा।
माद्यावापृथिवी अभि शाचीर्मान्तरिक्ष मा
वनस्पतीन्।। तुलसी पत्राणि समर्पयामि।।

दुर्वा-ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि।
एवा
नो दूर्वे प्रतनुसहस्त्रेण शतेन च ।। दूर्वां
समर्पयामि।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

शमीपत्रं- अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दु:स्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।
श० समर्पयामि

आभूषणं- वज्र माणिक वैदूर्य मुक्ता
विद्रुममण्डितम्।पुष्पराग
समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्याम्।। आ० स०

सुगन्धि तैलं- अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेति
परिबाधमान:। हस्तघ्ना विश्वा वयुनानि
विद्वान्पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वत:। सु० तैलं
स०

धूपं-ॐ नम: कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नम:
सहस्त्रक्षाय च शतधन्वने च। नमो गिरिशयाय
च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय
चेषु धिमते च।।
धूपमाघ्रापयामि।।

दीपं- ॐ नमो आशवे चाजिराय च नम: शीघ्र्याय च
शोभ्याय च नम: ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो
नादेयाय च द्वीप्याय च।।
दीपं दर्शयामि (हस्तप्रक्षालनम्)।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नैवेद्यं-ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो। मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।। नैवेद्यं निवेदयामि।।

मध्ये पानीयं-ॐ नमः सोम्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय चक्षेम्याय च नमः। श्लोक्याय चावसन्याय च नमः ऊर्वर्याय च खल्वाय च।। मध्ये पानीय समर्पयामि।।

ऋतुफलं- फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ऋ०स०आचमन-त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्ठशाश्वत।गृहाणाचमनी यंचपवित्रोदककल्पितम्।।

आ० स० अखण्डफल- कूष्माण्ड मातुलुङ्गञ्च नारिकेल फलानि च। रम्याणि पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम्।। अ० स०

ताम्बूलं- ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पुष्ट ग्राम अस्मिन्ननातुरम्।। ता॰ समर्पयामि

दक्षिणा- न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे।
दक्षिणा कांचनी देव स्थापयामि तवाग्रतः।
द॰ द्रव्यस॰

सदाशिव की आरती

कर्पूरगौंर करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

शंकर शिवजी की आरती

जै शिव ओंकारा, हो शिव पार्वती प्यारा,
हो शिव ऊपर जलधारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।१।।
ॐ हर हर हर महादेव ।। टेक ।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। शिव पञ्चानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन २,वृषवाहन साजै।२। ॐ हर॰ ।।
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै। शिव दशभुज ते सोहै।
तीनों रूप निरखता २, त्रिभुवनजन मोहै।३। ॐ हर॰ ।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमालाधारी। शिव मुण्डमालाधारी।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले २, शुभकारी ।४। ॐ हर० ।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। शिव बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक २, भूतादिक संगे ।५। ॐ हर० ।।
करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता। शिव चक्रत्रिशूल धारी। जगकर्त्ता जगहर्त्ता २, जगपालनकर्त्ता ।६। ॐ हर० ।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत त्रिविवेका।शिव जानत त्रिविवेका। प्रणव अक्षर मध्ये २, ये तीनों एका ।७। ॐ हर० ।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै। शिव जो कोई नर गावै।।
भणत शिवानन्दस्वामी २, मनवांछित फल पावै ।८।
ॐ हर० ।।
जै शिव ओंकारा, हो शिव गल मुण्डनमाला,
हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव पीते भंगप्याला,
हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वती प्यारा,
हो शिव ऊपर जलधारा।।ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।९।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्री शिव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

ध्यानश्लोकः

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः।।

१. ओं शिवाय नमः
२. ओं महेश्वराय नमः
३. ओं शम्भवे नमः
४. ओं पिनाकिने नमः
५. ओं शशिशेखराय नमः
६. ओं वामदेवाय नमः
७. ओं विरूपाक्षाय नमः
८. ओं कपर्दिने नमः
९. ओं नीललोहिताय नमः
१०. ओं शङ्कराय नमः
११. ओं शूलपाणये नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

१२. ओं खट्वाङ्गिने नमः
१३. ओं विष्णुवल्लभाय नमः
१४. ओं शिपिविष्टाय नमः
१५. ओं अम्बिकानाथाय नमः
१६. ओं श्रीकण्ठाय नमः
१७. ओं भक्तवत्सलाय नमः
१८. ओं भवाय नमः
१९. ओं शर्वाय नमः
२०. ओं त्रिलोकेशाय नमः
२१. ओं शितिकण्ठाय नमः
२२. ओं शिवाप्रियाय नमः
२३. ओं उग्राय नमः
२४. ओं कपालिने नमः
२५. ओं कौमारये नमः
२६. ओं अन्धकासुरसूदनाय नमः
२७. ओं गङ्गाधराय नमः
२८. ओं ललाटाक्षाय नमः
२९. ओं कालकालाय नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

३०. ओं कृपानिधये नमः

३१. ओं भीमाय नमः

३२. ओं परशुहस्ताय नमः

३३. ओं मृगपाणये नमः

३४. ओं जटाधराय नमः

३५. ओं कैलासवासिने नमः

३६. ओं कवचिने नमः

३७. ओं कठोराय नमः

३८. ओं त्रिपुरान्तकाय नमः

३९. ओं वृषाङ्काय नमः

४०. ओं वृषभारूढाय नमः

४१. ओं भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः

४२. ओं सामप्रियाय नमः

४३. ओं स्वरमयाय नमः

४४. ओं त्रयीमूर्तये नमः

४५. ओं अनीश्वराय नमः

४६. ओं सर्वज्ञाय नमः

४७. ओं परमात्मने नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

४८. ओं सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः

४९. ओं हविषे नमः

५०. ओं यज्ञमयाय नमः

५१. ओं सोमाय नमः

५२. ओं पञ्चवक्त्राय नमः

५३. ओं सदाशिवाय नमः

५४. ओं विश्वेश्वराय नमः

५५. ओं वीरभद्राय नमः

५६. ओं गणनाथाय नमः

५७. ओं प्रजापतये नमः

५८. ओं हिरण्यरेतसे नमः

५९. ओं दुर्धर्षाय नमः

६०. ओं गिरीशाय नमः

६१. ओं ईशानाय नमः

६२. ओं अनघाय नमः

६३. ओं भुजङ्गभूषणाय नमः

६४. ओं भर्गाय नमः

६५. ओं गिरिधन्वने नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

६६. ओं गिरिप्रियाय नमः
६७. ओं कृत्तिवाससे नमः
६८. ओं पुरारातये नमः
६९. ओं भगवते नमः
७०. ओं प्रमथाधिपाय नमः
७१. ओं मृत्युञ्जयाय नमः
७२. ओं सूक्ष्मतनवे नमः
७३. ओं जगद्व्यापिने नमः
७४. ओं जगद्गुरवे नमः
७५. ओं व्योमकेशाय नमः
७६. ओं महासेनजनकाय नमः
७७. ओं चारुविक्रमाय नमः,
७८. ओं रुद्राय नमः
७९. ओं भूतपतये नमः
८०. ओं स्थाणवे नमः
८१. ओं अहये बुध्न्याय नमः
८२. ओं दिगंबराय नमः
८३. ओं अष्टमूर्तये नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

८४. ओं अनेकात्मने नमः

८५. ओं सात्त्विकाय नमः

८६. ओं शुद्धविग्रहाय नमः

८७. ओं शाश्वताय नमः

८८. ओं खण्डपरशवे नमः

८९. ओं अजाय नमः

९०. ओं पाशविमोचकाय नमः

९१. ओं मृडाय नमः

९२. ओं पशुपतये नमः

९३. ओं देवाय नमः

९४. ओं महादेवाय नमः

९५. ओं अव्याय नमः

९६. ओं हरये नमः

९७. ओं भगनेत्रभिदे नमः

९८. ओं अव्यक्ताय नमः

९९. ओं दक्षाध्वरहराय नमः

१००. ओं हराय नमः

१०१. ओं पूषदन्तभिदे नमः

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

१०२. ओं अव्यग्राय नम:

१०३. ओं सहस्त्राक्षाय नम:

१०४. ओं सहस्त्रपदे नम:

१०५. ओं अपवर्गप्रदाय नम:

१०६. ओं अनन्ताय नम:

१०७. ओं तारकाय नम:

१०८. ओं परमेश्वराय नम:

।। शिवार्पणमस्तु ।।